राधा अष्टमी व्रत कथा PDF

श्री राधा रानी श्री कृष्ण के साथ गोलोक में निवास करती थीं। एक दिन राधा रानी गोलोक में नहीं थीं। उस समय श्री कृष्ण जी अपनी सखी विराजा के साथ यात्रा कर रहे थे। जब यह बात राधा रानी को पता चली तो उन्होंने श्री कृष्ण को बहुत बुरा भला कहा, राधा रानी श्री कृष्ण से बहुत क्रोधित हो गईं।

राधा जी को इतना क्रोधित देख विराजा नदी के रूप में वहां से निकल गईं। श्री कृष्ण को भला–बुरा कहने के कारण श्री कृष्ण के मित्र श्रीदामा ने राधा जी को पृथ्वी पर जन्म लेने का श्राप दे दिया। इस पर राधा जी क्रोधित हो गईं और श्रीदामा को राक्षस कुल में जन्म लेने का श्राप दे दिया। राधा जी के श्राप के कारण श्रीदामा का जन्म शंख तोड़ने वाले राक्षस के रूप में हुआ, जो बाद में भगवान विष्णु का बहुत बड़ा भक्त बन गया।

श्रीदामा के श्राप के कारण राधा जी ने पृथ्वी पर वृषभानु के घर पुत्री के रूप में जन्म लिया। वृषभानु वृषभानुपुरी का एक उदार राजा था। वृषभानु का जन्म महाकुल में हुआ था, उन्हें चारों वेदों और पुराणों का संपूर्ण ज्ञान था। उन्हें आठ सिद्धियों का आशीर्वाद प्राप्त था और वे धनी और उदार थे।

वह संयमी, शांत, सदाचारी और भगवान विष्णु का उपासक था। उनकी पत्नी का नाम श्रीकीर्तिधा था, वह सुन्दरता में उत्कृष्ट थी और महाकुल में जन्मी थी। वह सर्वगुण सम्पन्न तथा महालक्ष्मी के समान अपने पति के प्रति समर्पित महिला थी। राधा जी वृषभानु और श्रीकीर्तिधा की पुत्री के रूप में अवतरित हुईं और उनका जन्म उनके गर्भ से नहीं हुआ था।

जब राधा जी और श्रीदामा ने एक दूसरे को श्राप दिया तो श्री कृष्ण ने राधा जी से कहा कि अब तुम्हें वृषभानु की पुत्री बनकर पृथ्वी पर रहना होगा। वहाँ तुम्हारा विवाह रायाण नमक वैश्य से होगा जो मेरा अंशावतार होगा। पृथ्वी पर भी तुम मेरी प्रियतमा बनकर रहोगी। उसी रूप में हमें वियोग का दुःख सहना पड़ेगा। अब आप धरती पर अवतार लेने की तैयारी करें। सांसारिक दृष्टि से देवी

श्रीकीर्तिधा गर्भवती हुईं लेकिन जोगमाया की कृपा से उनके गर्भ में केवल वायु का प्रवेश हुआ और उन्होंने वायु को ही जन्म दिया। प्रसव पीड़ा के दौरान राधा रानी उनकी पुत्री के रूप में वहां प्रकट हुईं।

जिस दिन राधा जी प्रकट हुईं वह भाद्रपद शुक्ल अष्टमी का दिन था। इसलिए भाद्रपद शुक्ल अष्टमी को राधा अष्टमी के नाम से जाना जाता है। इस दिन भगवान श्री कृष्ण और राधा रानी की पूजा की जाती है। इस व्रत को करने से हमें सभी सांसारिक सुखों की प्राप्ति होती है।

pdfinbox.com